RNI No. UPHIN / 2012 / 45400

ISSN 2456-8775

शीतल वाणी

वर्ष 6 अंक 5

अगस्त - अक्टूबर - दिसम्बर 2018 (संयुक्तांक)

त्रैमासिक हिन्दी प्रकाशन

संरक्षक :

आर.पी. शुक्ल आईएएस (रा.नि.)

संपादकीय परामर्श

डॉ. कमलकांत बुधकर

डॉ. रवीन्द्र अग्रवाल

संपादक :

डॉ. वीरेन्द्र 'आज़म'

सहायक संपादक :

राजेन्द्र शर्मा

प्रबंध संपादक :

मनीष कच्छल

संयुक्त संपादक

रजनीकांत, अरिमर्दन सिंह गौर

उप संपादक

अशोक गुप्ता

रेखांकन : विज्ञान व्रत, अनुभूति गुप्ता

आवरण: विज्ञान व्रत

संपादक (डिजाइन) : अमित पाण्डेय

इस प्रति का मूल्य - 25 रुपये मात्र

त्रिवार्षिक सदस्यता - 500 रुपये मात्र

आजीवन सदस्यता - 2000 रुपये मात्र

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय-

2 सी/755, पत्रकार लेन, प्रद्युमन नगर,

मल्हीपुर रोड, सहारनपुर (उ.प्र.)

संपर्क : 9412131404

ई-मेल : sheetalvani.com@gmail.com

virendraaazam@yahoo.com

संपादक मंडल के सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक और अव्यवसायिक रूप से केवल साहित्यिक व सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी हैं।

शीतल वाणी में प्रकाशित लेख/रचनाओं के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक मीनाक्षी सैनी ने सृजन प्रिंट्स, अंबाला रोड, सहारनपुर से मुद्रित कराकर कार्यालय 2 सी/755, पत्रकार लेन, प्रद्युमन नगर, मल्हीपुर रोड, सहारनपुर (उ.प्र.) से प्रकाशित किया।

सभी विवादों के लिए सहारनपुर न्यायालय मान्य।

साल 2018! तुम बहुत याद आओगे

साल 2018 ! हिन्दी जगत को तुम बहुत याद आओगे ! इसलिए नहीं कि तुमने बहुत कुछ दिया, बल्कि इसलिए कि तुमने हमसे बहुत कुछ छीन लिया। वह सब, जिसे हम अभी खोना नहीं चाहते थे। 'वह गंध' जिससे महक रहा था समूचा हिन्दी उपवन ! 'वे दीए', जिनसे आलोकित हो रही थी समूचित साहित्य धरा। 2018 हम माफ़ नहीं करेंगे तुम्हें ! तुमने काल के साथ तालमेल कर खामोश कर दी काव्य मंचों की कई सुमधुर आवाज़ें और सुखा दी काव्य गंगा की कई धाराएँ। साथ-ही विराम दे दिया कई कथा-कहानियों को भी ! कवि, गीतकार, कथाकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, लेखक और पत्रकार ! एक-एक कर जाते रहे और हम ठगे से खड़े रह गए।....."कारवाँ गुज़र गया-गुबार देखते रहे"! साल 2017, तीसरा तार सप्तक के कवि कुँवर नारायण को नवंबर में हमसे छीनने के साथ विदा हुआ था। आशा थी कि 2018 हिन्दी साहित्य जगत के लिए बेहतर रहेगा और सृजन वर्ष के लिए याद किया जायेगा। लेकिन 2018 तुमने तो हमें शुरु से ही आघात देने शुरु कर दिये थे। जनवरी में ही मशहूर कथाकार दूधनाथ सिंह को हमसे छीन लिया। इसी महीने हास्य के विलक्षण कवि सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) के अट्टाहस भी शून्य में कहीं लोप हो गए। मार्च आते-आते गाँव-प्रकृति के चितेरे, समकालीन कविता के ख्यात कवि और एक श्रेष्ठ मानव केदारनाथ सिंह भी हमसे विदा हो गए। इसी महीने हिन्दी और अवधी के लेखक-व्यंग्कार, सुशील सिद्धार्थ भी तुम्हारे आगोश में चले गये। मालवी और हिन्दी को एक ही धागे में पिरोकर मंचों से जीवंतता बाँटने वाले वीररस के प्रतिख्यात कवि बालकवि बैरागी तथा गीतों के हिमालय व पीड़ा के राजकुँवर गोपालदास नीरज का इसी 2018 में हुआ अवसान हम कैसे भूल जाएँ ! हम कैसे भूल जाएँ हिन्दी और उर्दू मुशायरों के समान रुप से लोकप्रिय शायर और संचालक अनवर जलालपुरी का जाना। ऑस्ट्रेलिया में निरंतर हिन्दी की अलख जगाए रखने वाले तथा 'हिन्दी का दिनेश' नाम से विख्यात डॉ. दिनेश कुमार श्रीवास्तव और 'मॉरीशस के प्रेमचंद' कहे जाने वाले कथाकार अभिमन्यु अनत का निधन हम कैसे भुला दें। इन दोनों का जाना विश्व हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति है। इनके अलावा शब्दों व चित्रों के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न रंगों को ज़िन्दगी के कैनवास पर उकेरने वाले शुकदेव श्रोत्रिय तथा 'नर्मदा पुत्र' अमृतलाल बेगड़ का निधन कलाप्रेमियों के लिए जितनी दुखद घटना है उतनी ही साहित्य के लिए भी। पत्रकारिता जगत को भी साल 2018 ने कई आघात दिए। सितंबर महीने में हिन्दी अकादमी दिल्ली के उपाध्यक्ष, पत्रकार-संपादक, कवि, समीक्षक और खरी बात कहने के लिए जाने जाते विष्णु खरे जहाँ परलोक के लिए गमन कर गए वहीं राष्ट्रवादी, निर्भीक, राजनीति के अनूठे विश्लेषक और पत्रकारिता के भीष्म पितामह कहे जाने वाले वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैय्यर और वरिष्ठ पत्रकार राजकिशोर को भी साल 2018 अपने साथ ले गया। इतना ही नहीं जाते-जाते गत 7 दिसंबर को छत्तीसगढ़ के प्रख्यात पत्रकार पद्मश्री पं. श्यामलाल चतुर्वेदी को भी यह साल हमसे झपट्टा मारकर ले गया। उक्त सब साहित्य मनीषी सदेह भले ही हमारे बीच न रहे हों लेकिन अपनी रचनाओं के साथ वे सदैव हमारे बीच रहेंगे। इनका लिखा हम जब जब पढ़ेंगें, इनकी कविताएँ, गीत हम जब-जब गुनगुनाएँगें 2018 तुम बहुत याद आओगे, भरे पूरे आक्रोश के साथ ! 'शीतलवाणी' के इस अंक में वरिष्ठ पत्रकार डॉ. संजय द्विवेदी ने जहाँ चतुर्वेदी जी को स्मृति लेख के माध्यम से भावपूर्ण स्मरण करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी है वहीं रोहित कौशिक ने अपने संस्मरण के जरिये शुकदेव श्रोत्रिय को श्रद्धासुमन अर्पित किये हैं। इसी अंक में वरिष्ठ कवि व लेखक ओम निश्चल ने भी अपने स्मृति लेख के माध्यम से गिरिजा कुमार माथुर को भावांजलि दी है। 2018 में विदा हुए माँ शारदा के इन सब वरद् पुत्रों की शब्द साधना को प्रणाम करते हुए 'शीतलवाणी' परिवार का भी शत-शत नमन !

(वीरेन्द्र आज़म)

Annexure IX (Page-3) cont.

कुछ ख़ास शेर

दिल ना-उमीद तो नहीं नाकाम ही तो है
लम्बी है गम की शाम मगर शाम ही तो है
- फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

पहले नहाई ओस में फिर आँसुओं में रात
यूँ बूँद बूँद उतरी हमारे घरों में रात
- शहरयार

ग़म्ज़ा नहीं होता कि इशारा नहीं होता
आँख उन से जो मिलती है तो क्या क्या नहीं होता।
- अकबर इलाहाबादी

गाहे गाहे की मुलाकात ही अच्छी है 'अमीर'
क़द्र खो देता है हर रोज़ का आना जाना
- अमीर मीनाई

मोहब्बतों में दिखावे की दोस्ती ना मिला
अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी ना मिला
- बशीर बद्र

ओ शहर जाने वाले ये बूढ़े शजर न बेच
मुमकिन है लौटना पड़े, गांव का घर न बेच।
- डॉ. नवाज़ देवबंदी

कट गये है हाथ तो आवाज़ से पथराव कर,
याद सबको यार मेरे ये समां रह जाएगा।
- डॉ. अश्वघोष

वो सुब्ह बहुत है हमें इक शाम बहुत है
जीने के लिए सिर्फ़ तेरा नाम बहुत है।
- डॉ. गणेश गायकवाड़

इस अंक में... अगस्त - अक्तूबर - दिसम्बर 2018 (संयुक्तांक)

अपनी बात		1
साल 2018 । तुम बहुत याद आओगे		
आलेख		
नवगीत की लोकचेतना और वर्तमान	*डॉ. राधेश्याम बंधु*	3-5
संवेदना के स्तर पर सार्थक अभिव्यक्ति	*प्रो. फूल चंद मानव*	18-21
स्मृति आलेख		
मेरे युवा आम में नया बौर आया है	*ओम निश्चल*	6-7
उनकी आँखों में था एक समृद्ध लोकजीवन	प्रो. संजय द्विवेदी	8-10
प्रकृति और शब्दों के चितेरे शुकदेव श्रोत्रिय	*रोहित कौशिक*	11-12
अब कौन आगे बढ़ाएगा ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी	डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री	13-15
पुनर्पाठ		
जब महाकवि निराला ने जकड़ ली रेडियो एनाउंसर की गर्दन		16-17
लघु कथाएँ		
बेटियाँ	*आकांक्षा यादव*	17
बकरी और सिंह शावक/अवमूल्यन	*सीताराम गुप्ता*	27
साक्षात्कार		
मेरी रचनाओं में प्रेम भी है और आक्रोश भी : अनु	*मीनाक्षी सैनी*	22-24
कहानी		
कही अनकही	*वल्लभ डोभाल*	25-27
तमाचा	*डॉ. उषा यादव*	28-33
निशानी	*नज़्म सुभाष*	34-36
काव्यलोक		
दोहे : *डॉ. राजगोपाल और सीताराम गुप्ता*		37
ग़ज़लें : *विज्ञान व्रत, इरशाद सागर, राजेन्द्र राजन, राजेन्द्र तिवारी, सुरेश उजाला, महाश्वेता चतुर्वेदी, लक्ष्मी नारायण पयोधि, नवीन माथुर पंचोली, कृष्ण कुमार प्रजापति, सुलेमान आदिल, सुरेन्द्र कुमार*		38-42
गीत : *इन्द्रा गौड़, अनीता सक्सेना, सुरेश प्रकाश शुक्ल*		43-44
कविताएँ : *प्रतिभा चौहान, कुमार शर्मा अनिल, [redacted] देवेन्द्र कुमार मिश्रा, अनुभूति गुप्ता, शुभम श्रीवास्तव, नरेश निर्वाण*		45-47
पत्रिकाएँ मिली		55
शोध आलेख		
लघु पत्रिका अवधारणा, आन्दोलन और उपलब्धि	*चन्दन कुमार भारती*	48-50
विविधता के कवि नागार्जुन	*कनक लता रिद्धि*	51-55
छिन्नमूल उपन्यास सूरीनाम की महागाथा	*डॉ. रमेश कुमार*	56-61
आदिवासी साहित्य : चिंतन की दिशाएँ	*डॉ. गौतम भाईदास कुवर*	62-65
फणीश्वर नाथ रेणु के आंचलिक उपन्यासों	*नयन चटर्जी*	66-70
		71-75
पुस्तक समीक्षा		76-80
साहित्यिक गतिविधियाँ		

23/107

105

Deepti

Annexure IV (Page-4 Cont.)

स्मृति- गंध

एक लम्बे टेलीफोनिक
परिचय के बाद
खिले गुलाब के साथ
मिली थी मैं झील पर तुमसे।
बहुत भीड़ है यहाँ
कहा था तुमने
और मंत्र-मुग्ध सी मैं
चल पड़ी थी साथ
तुम्हारे एकांत में।
मुझे नहीं पता
वह बोझ
सिर्फ़ तुम्हारी देह का था
या हवस का एक
पूरा हिमालय था।
बहुत कुछ टूटा-फूटा था
उस रोज़।
तुम नहीं जानते
मेरी हथेलियों में सहेजा
पवित्र प्रेम का
वह खिला गुलाब
तब भी सलामत था
इतनी टूट-फूट के बाद भी
उसकी हर पत्ती मेरी स्मृति में
अब काँटों की तरह चुभती है
गुलाबी महक सोने नहीं देती।
मैं चाहती हूँ
एक बार फिर
मिलो तुम मुझसे अंतिम बार
ताकि सौंप सकूँ
प्रेम का प्रतीक
यह गुलाब भी तुम्हें
मसलने के लिए
और मुक्त हो सकूँ
इस स्मृति-गंध से।

कुमार शर्मा 'अनिल'
1192-बी, सैक्टर 41-बी, चण्डीगढ़
मो.: 09917882239

माँ

माँ
विचारों के समुद्र से
सीप खोजकर
लाने की कोशिश में
निकल पड़ी विचारों की बस्ती में
सुन्दर विषय की खोज में
देखा तो अनेक विषय मिले
लिखने को,
जिन पर चलने को थी
क़लम बेकरार
किस पर लिखूँ न लिखूँ
इसी सोच में डूबी क़लम चलाने लगी।
मन की गहराईयों में तभी
करूणामयी माँ की मूरत दिखी
सहस्रों आशीष देती
भीनी मधुर पुरवाई सी दिखी
अपनी गोद में दुनिया का
आतप झंझावात भुलाती।
स्नेह से हाथों का
स्वादिष्ट खाना खिलाती,
चुपचाप गम समेट
खुशियों की बहार लाती।
कभी नाराज़ होती
कभी मनौतियाँ करती
सदैव सुसंस्कारों से
जड़ें सींचती,
हौंसला बढ़ाकर
ज़िन्दगी से लड़ना सिखाती
चट्टान की तरह
फ़ौलाद बनाती।

माँ
तेरे कदमों के नीचे
मैं जन्नत पाती
तेरी दुआओं से
हर पल सुख पाती

माँ
तेरे बिन खुद को
आज अधूरा पाती
देव, मानव सबसे तू है महान
माँ
ब्रह्माण्ड में कोई न तेरे समान
तेरा ऋण चुकाना
असंभव है काम
तेरे चरणों में
माँ
मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

डॉ. दीप्ति साहनी
द्वारा डॉ. साहिल साहनी, 19-ई, कालेज लेन,
रानी का बाग, अमृतसर। मो. 8146376600

प्यार

24/107
106
Deepti